राष्ट्रीय याज़ उन्मूलन कार्यक्रम

वर्ष 2000–01 में प्रदेश के चार जिलों – रायपुर, दुर्ग, बस्तर एवं दंतेवाड़ा में याज़ के संभावित 15 मरीज पाए गए थे जिनका रक्त परीक्षण जगदलपुर स्थित क्षेत्रीय संचारी रोग संस्थान के संयुक्त संचालक डॉ. आर. पण्डा द्वारा किया गया था एवं दूरभाष पर प्राप्त जानकारी के अनुसार इनमें से कोई याज़ का सकारात्मक रोगी नहीं पाया गया था।

चार जिलों के संभावित याज़ प्रभावित विकासखण्ड निम्नानुसार है :–

जिला	विकासखण्ड
रायपुर	मैनपुर
दुर्ग	डौण्डी
बस्तर	ओरछा
दंतेवाड़ा	भैरमगढ़

याज़ प्रभावित जिलों में मरीजों का खोज सह उपचार कार्यक्रम प्रतिवर्ष किया जा रहा है। याज़ को विभिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे –गोंडी रोग, माडियारोग, कोयारोग आदि।

वर्तमान में प्रदेश के समस्त जिलों में याज़ उन्मूलन कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

याज़ बीमारी के लक्षण

प्रारंभिक अवस्था में चमडी पर बडे पीले रंग का चमडी नूमा उभार होता है तथा प्रथम पांच वर्षो में चमडी के अतिरिक्त श्लेश्मा एवं हड्डीयों को प्रभावित करता है , तथा प्रारंभिक अवस्था में बीमारी की संक्रामकता अधिक होती है , तथा बाद की अवस्था में चमड़ी एवं हड्डीयों में बीमारी इतना बढ़ जाता है कि विकृति आ जाती है। हथेली पांव के तन्तुओं में सुखापन पांव नाक एवं हाथों में घाव हो जाती हैं, बाद की अवस्था में बीमारी संक्रमण विहीन हो जाती है।

याज़ का उन्मूलन संभव है

वर्ष 1988 में सर्वप्रथम मध्यप्रदेश के बस्तर जिले में 423 प्रकरण याज़ के पाए गए थे जो वर्ष 2001 में घटरकर 90 पर आ गए हैं, वहीं वर्ष 1997 में रायपुर जिले के मैनपुर क्षेत्र में 45 संभावित याज़ के प्रकरण पाए गए थे जो वर्ष 2001 में 3 पर आये हैं एवं दंतेवाड़ा जिले के भैरमगढ़ में याज़ के दो प्रकरण पाए गए हैं। वर्ष 2002 में राज्य के समस्त 16 जिलों में अप्रैल एवं नवंबर माह में दो बार संपूर्ण जनसंख्या 2,28,96,677 में सर्वेक्षण कराया गया। सर्वे उपरांत प्रकरण निरंक पाए गए। स्वास्थ्य कार्यकर्ता इस महत्वपूर्ण बीमारी की पहचान कर सम्पूर्ण सूचनाएं निर्धारित प्रपत्र में भरकर अपने चिकित्सा अधिकारी को सूचित करेंगे। नियमित उपचार की व्यवस्था की जा चुकी है कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जा चुका है अब छत्तीसगढ़ भी अन्य राज्यों की तरह याज़ मुक्त राज्य का दर्जा पा सकेगा।

विशेष
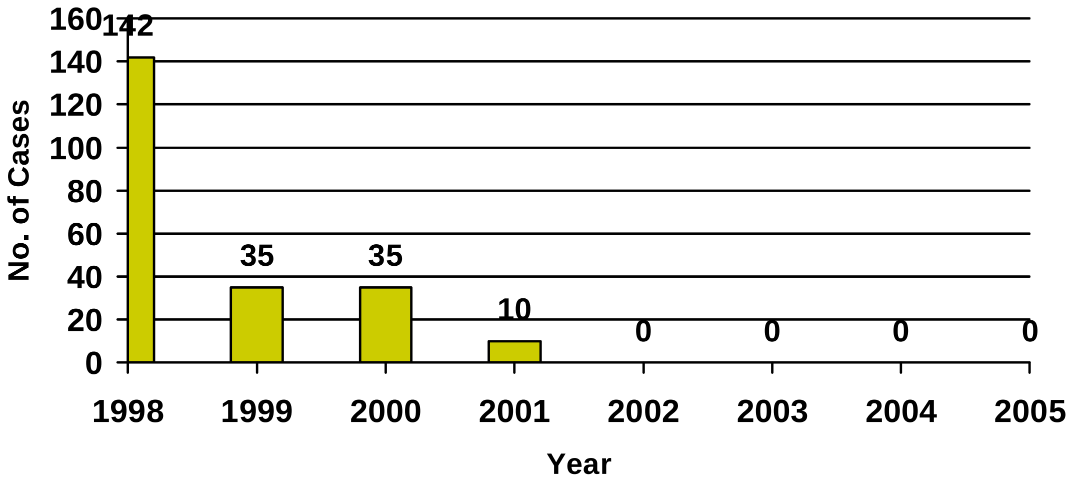
विगत वर्ष जकार्ता (इंडोनीशिया) में याज पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ जिसमें छत्तीसगढ़ (भारतवर्ष) में किये गये कार्यों को सराहा गया, इसी के तहत इस वर्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दिसंबर 2005 में याज कार्यक्रम के अंतर्गत इंडोनीशिया में याज की स्थिति का आकलन कर एक सफल कार्य योजना तैयार करने हेतु पूरे भारतवर्ष से छत्तीसगढ़ के राज्य नोडल अधिकारी याज कार्यक्रम को अल्प कालिक सलाहकार के रूप में तीन सप्ताह के लिये इंडोनेशिया भेजा गया।